International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 2, February- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

स्वाधीनता आन्दोलन में हिन्दी की भूमिका

डा. सुमन पलासिया
सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग
मा.ला.व.राजकीय महाविद्यालय, भीलवाड़ा(राजस्थान)

शोध सार

स्वाधीनता आन्दोलन के प्रारम्भिक दौर में हिन्दी भाषा का ज्यादा प्रभाव नहीं रहा पर भारतेन्दु हरिशचन्द्र ने हिन्दी भाषा को स्थापित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई. 1857 के बाद से लेकर उन्नीसवी शताब्दी के समाप्त होने तक भाषा को लेकर उर्दू व हिन्दी को विवाद चलता रहा पर अपने प्रयासों से भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने हिन्दी को स्वतंत्रता संघर्ष के आन्दोलनकारियों की भाषा बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई. उस समय के तत्कालीन परिवेश में उर्दू को ज्यादा महत्व मिलता था पर भारतेन्दु हरिश्वन्द्र के प्रयासों से हिन्दी भाषा को भी यथोचित स्थान मिला. यह भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के प्रयासों को ही परिणाम था कि कालान्तर में हिन्दी भाषा को भी अन्य भाषाओं के समान स्वाधीनता संग्राम में करोड़ों हिन्दुस्तानियों के भावों की अभिव्यक्ति का माध्यम बनने का अवसर प्रदान किया.

बीज शब्द

स्वाधीनता आन्दोलन, भारतेन्दु, हिन्दी व उर्दू, हरिशचन्द्र

मूल आलेख

जब प्रेमचन्द यह कहते हैं कि 'दुनिया में मानव जाति के कल्याण के लिए जितने आंदोलन हुए हैं उन सभी के लिए साहित्य ने ही जमीन तैयार की है, जमीन ही नहीं तैयार की, बीज भी बोये और सिंचाई भी की. साहित्य राजनीति के पीछे चलने वाली चीज नहीं इसके आगे चलने वाला 'एडवांस गार्ड' है.'[प] तो उनका भाव यह ही बताने का रहा होगा कि साहित्य राजनीतिक गतिविधियों या घटनाओं से बहुत आगे की चीज हैं. या ये भी कि साहित्य ही किसी भी देश में होने वाली राजनीतिक घटनाओं के लिए जमीन या पृष्ठभूमि तैयार करने का कार्य करता है. पर इसके साथ यह भी सच है कि इस प्रकार से होने वाली राजनीतिक घटनाये किसी भी देश के सारे साहित्यिक परिदृश्य को परिवर्तित करने में अग्रणी भूमिका निभाती है, जैसे कि 1857 की क्रान्ति ने हिन्दी भाषा और साहित्य के साथ किया है.

इस देश में अंग्रेजी शक्तियाँ सबसे पहले बंगाल और महाराष्ट्र के रास्ते ही प्रवेश हुई थी. इसलिए वहाँ राजनैतिक चेतना और नवजागरण पहले आया और हिन्दी पटट्ी के प्रदेशों में यह बाद में आया.'हिन्दी पटट्ी में नवजागरण की आहटें बंगाल एवं महाराष्ट्र के मुकाबले काफी देर से आई और जब आई तो राजनैतिक स्वतंत्रता प्राप्ति के लक्ष्य से लड़े जाने वाले 1857 के प्रथम स्वतंत्रता आंदोलन के साथ'[पप] ही आई.'1857 के इस महाविद्रोह ने सिर्फ राजनीतिक स्तर पर ही जनता को प्रभावित नहीं किया अपितु साहित्यिक, सांस्कृतिक स्तर पर भी इसका गहरा प्रभाव पड़ा.'[पपप]

1857 के भारतीय स्वतंत्रता संग्राम भारतीय इतिहास की एक महत्त्वपूर्ण घटना है जिसे निरापद रूप से आधुनिक हिन्दी साहित्य के काल का प्रारंभन बिन्दु स्वीकार किया जा सकता है'[पअ] 1857 की क्रान्ति के समय जिस प्रकार देशभक्ति और राष्ट्रवाद अपनी प्रारंभिक अवस्था में था उस प्रकार हिन्दी भाषा और साहित्य भी अपने नवनिर्माण के दौर से गुजर रही थी. हिन्दी भाषा खड़ी बोली के खड़ाऊ में आपने पाँवों को डालकर खड़े होने का प्रयास कर रही थी. यह समय वह समय था जब न सिर्फ हिन्दी भाषा और भाषा का व्याकरण बन रहा था बल्कि गद्य लेखन के नये प्रारूप और मार्ग भी अन्वेषित किये जा रहे थे.

1857 के भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के उस दौर में भी दिल्ली से प्रकाशित होने वाला पत्र ''पयामे आजादी'' उर्दू के साथ साथ देवनागरी लिपि में भी प्रकाशित हुआ था. इसी पत्र में सम्राट बहादुर शाह की ऐतिहासिक घोषणा प्रकाशित हुई थी जिसमें भारत के दोनों सम्प्रदायों के नागरिकों से एक साथ उठकर के अंग्रेजों से लड़ने के लिए अपील की गई थी. इसी पत्र में 1857 के क्रान्तिकारियों का झंडा गीत भी

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 2, February- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

प्रकाशित हुआ था जिसके बारे में ऐसा माना जाता है कि उसकी रचना 1857 के क्रान्तिवीर अजीमुल्ला ने की थी.जिसमें ऐसी उद्वेलित करने वाली पंक्तियाँ भी थी कि–

''भारत में साम्राज्यवाद का होगा नहीं गुजारा
पूंजीवादी लूट ठगी का होगा नहीं पसारा
आज शहीदों ने है हमको अहले वतन ललकारा
उनके सपने पूरे करना है अब काम हमारा''

1857 और उसके बाद के 20–30 वर्षों के काल को हिन्दी साहित्य में ''भारतेन्दु काल'' के नाम से भी जाना जा सकता है. यह आश्चर्य की बात है कि हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल से 500–600 वर्ष पूर्व तक का लिखा गया लगभग सारा का सारा साहित्य पद्यात्मक है और खड़ी बोली में लिखा गया है. खड़ी बोली में लिखे गये इस साहित्य पर या तो अवधी या ब्रज भाषा का गहरा प्रभाव है या ये लिखा ही अवधी या ब्रज भाषा में गया है. अब यह उस दौर की तकनीकी सीमायें भी मानी जा सकती है मुद्रण प्रणाली के अभाव में गद्यात्मक साहित्य की तुलना में पद्यात्मक साहित्य को मौखिक परम्परा में लोक संस्कृति अपनी स्मृति में बनाये रख सकती है. या यह भी माना जा सकता है कि पद्यात्मक साहित्य अपनी प्रकृति में ही सरल है और मूलतः हृदय से निकलता है इसलिए यह ज्यादा प्रचलन में रंहा और गद्यात्मक साहित्य को पूर्णतः बौद्धिक विधा मान लिया गया है. भारतेन्दु का योगदान उस प्राचीन पद्यात्मक भाषा के मिथक को तोड़ने से जुड़ा हुआ है.'आधुनिक काल के आगमन और भारतीय मानसिक चेतना में पुनर्जागरण के प्रवाह स हिन्दी साहित्य लेखन व संस्कार ने हिन्दी भाषा प्रयोग को नई दिशा व आयाम दिये. सांस्कृतिक, राजनीतिक व सामाजिक नवचेतना ने पूर्व में बनी भाषा व साहित्य लेखन की ऊहापोह की स्थिति को तोड़ दिया जिसका श्रेय भारतेन्दु हरिश्चन्द्र(1850–1885) को जाता है.'[अ]

भारतेन्दु का जन्म 1857 की क्रान्ति के सात वर्ष पूर्व और निधन भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना से एक वर्ष पूर्व हुआ था. इनकी प्रारंभिक कविताओं में राजभक्ति के दर्शन होते हैं किन्तु ज्यों–ज्यों कवि व व्यक्ति के रूप में वे परिपक्व होते गये त्यों–त्यों इनकी वाणी पर देशभक्ति का गाढ़ा रंग चढता गया. क्योंकि अब वे अंग्रेजों की शोषण नीति को भली भंति जान गये थे. भारतेन्दु की जिस लेखनी ने अंग्रेजों की प्रशंसा के गीत लिखे बाद में उसी ने विद्रोह की भयंकर चिनगारियों को भी उगला.दरअसल में भारतेन्दु युग में देशभक्ति व राजभक्ति कुछ ऐसी घुली मिली हुई थी कि कभी–कभी इस युग के आलोचक को उस युग के कवि की राष्ट्रभक्ति पर सन्देह होने लगता है परन्तु उस युग की परिस्थितियों का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि भारतेन्दु व उनके युग के कवि सच्चे देशभक्त थे.

आधुनिक यग के प्रभात में छाये हुए अंधेरे को हटाने के लिए भारतेन्दु हरिशचन्द्र ने अंग्रेजों के विरूद्व अपनी आवाज को बुलन्दी के साथ उठाया. उन्हौंने देखा कि भारतीय समाज का नेतृत्व करने वाला कोई कवि नहीं है. साहित्य जो कि जीवनधारा को अनुप्रमाणित करता है गतिरूद्व हो चुका है, उन्हें यह बुरा लगा कि कवि अपना उत्तरदायित्व भूलकर वर्षों तक जनता से दूर राजाओं–नवाबों के विलास का साधन बना रहा, जिसके कारण साहित्यधारा दुर्गन्धित एवं विषाक्त कीटाणुओं से युक्त हो गई तथा अंग्रेज मनमाने ढंग से अपने स्वार्थ की दृष्टि से शासन करते है एवं उन्हें रोकने–टोकने वाला कोई नहीं है. इन्होंने हिन्दी कविता को एक नया रूप देने की आवश्यकता को महत्त्व दिया और इसलिए रीतिकालीन श्रृंगारिक वेग को रोककर राष्ट्रीय भावों से ओत–प्रोत जनता के सबसे अधिक निकट वाले भावों को महत्व दिया. 'भारतेन्दु क सामने अपने पूर्ववर्ती कवियों जैसी कोई मजबूरी नहीं थी. भारतेन्दु गुलाम, दुःखी और निराश भारतीयों में अपनी कविताओं से चेतना लाने का महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहे थे. वे अपनी कविताओं से आदिकाल के कवियों की तरह संकुचित राष्ट्रीय चेतना नहीं बल्कि वृहत भारत राष्ट्र के लिए चेतना जगाने का कार्य कर रहे थे. इस तरह सही अर्थों में राष्ट्रीयता की उस अवधारणा के प्रथम कवि भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ही थे'[अप].

अंग्रेजों के आने के बाद चले आर्थिक शोषण को भारतेन्दु पूरी तरह से समझ चुके थे. उस समय तक भगवान से राजा और राजा से जनता उपासना का यही क्रम अब अधिक महत्वपूर्ण हो गया था इसलिए उन्होंने इसी भाव की आड़ लेते हुए कहा कि–

''अंगरेज राज सुख साज सजे सब भारी
पै धन विदेश चलि जात, इहै अति ख्वारी''[अपप]

उनके इस वाक्य ने भयंकर रणनाद छेड़ दिया. दादाभाई नौरोजी क ''धन के निष्कासन'' सिद्वान्त का साहित्य में इससे बेहतर उदाहरण उस समय और नहीं हो सकता था. उनके इस प्रकार के लेखन से

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 2, February- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

राजा घृणा के पात्र बन गये और भिखारी की पूजा होने लगी. अब जनता में शासन के विरूद्व जाने की शक्ति उत्पन्न हुई और फलतः वह एक भीषण स्वाधीनता संग्राम की लिए कटिबद्ध हो गई.

हरिश्चन्द्र की लेखनी ने साहित्य के क्षेत्र में ही नहीं देश के जीवन में भी क्रान्ति मचा दी थी. उनका बहुमुखी प्रतिभा से देश और साहित्य का कोना–कोना प्रकाशित हो उठा. सभी साहित्यकारों ने इस यशस्वी साहित्य निर्माता को ''भारतेन्दु'' की उपाधि से विभुषित किया. अपनी 34 वर्ष की अल्पायु में भारतेन्दु जी ने जिन श्रेष्ठ ग्रंथो का प्रणयन किया वैसे श्रेष्ठ ग्रंथ अन्य कोई कवि नहीं लिख सका. इन्होंने ''कवि वचन सुधा''(1868),''हरिश्चन्द्र मैगजीन''(1873)व ''हरिश्चन्द्र चन्द्रिका''(1873) जैसी पत्रिकाओं में लगातार लिखते हुए हिन्दी साहित्य में गद्य की नयी शैली का विकास किया. इन पत्रिकाओं के संपादकीय में भारतेन्दु अंग्रेजी राज और उसकी नीतियों की कड़ी आलोचना करते थे. ''कवि वचन सुधा'' के 18 मई 1874 के अंक में भारतेन्दु लिखते हैं.'अब तो प्रतिवर्ष में कहों न कहीं दुश्काल पड़ा ही रहता है, मुख्य करके अंग्रेजी राज में इसका घर है. बहुधा ऐसा सुनने में आया है कि विसूचिका का रोग जो अब सम्पूर्ण भारतखंड में छा रहा है, अंग्रेजो के राज के आरम्भ से इसका प्रारम्भ हुआ है.....जब अंग्रेज विलायत से आते हैं, प्रायः कसे दरिद्र होते हैं और जब हिन्दुस्तान से अपने विलायत को जाते हैं तो कुबेर बनकर जाते हैं.....इससे सिद्ध हुआ कि रोग और दुश्काल इन दोनों के मुख्य कारण अंग्रेज ही हैं.'[अपपप] यहाँ यह भी देखना है कि यह सब 1874 में लिखा गया था जबकि तब तक तो भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का जन्म भी नहीं हुआ था. राष्ट्रवाद के बीज उस समय तो पूरी तरह से अंकुरित भी नहीं हुये होंगे उस समय हिन्दी भाषा के माध्यम से सीधे सीधे अंग्रेज सरकार को अपने समाचार पत्रों में लिखे अपने संपादकीयों और लेखों के माध्यम से दोषी ठहराना कितने साहस का काम रहा होगा.

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र अपने इसी साहस के कारण तत्कालीन सामाजिक परिदृश्य में हाथों हाथ लिये जाते थे. वह अपने क्रान्तिकारी विचारों के कारण जनता में इतने लोकप्रिय हो गये थे कि अंग्रेज सरकार ने जब शिवप्रसाद को 'सितारेहिन्द' पदवी से सम्मानित किया तो लेखकों और जनता ने हरिश्चन्द्र को 'भारतेन्दु' की पदवी देकर सिर आँखों पर बिठा लिया था.

'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का प्रभाव भाषा और साहित्य दोनों पर बड़ा गहरा पड़ा. उन्होंने जिस प्रकार गद्य की भाषा को परिमार्जित कर उसे बहुत ही चलता, मधुर और स्वच्छ रूप दिया उसी प्रकार हिन्दी साहित्य को भी नए मार्ग पर लाकर खड़ा कर दिया. उनके भाषा संस्कार की महत्ता को सब लोगों ने मुक्त कंठ से स्वीकार किया और वे वर्तमान हिन्दी गद्य के प्रवर्तक मान लिए गए.[पग]

भारतेन्दु बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे. उन्होंने काव्य, नाटक, जीवन चरित्र, निबन्ध समालोचना आदि सभी क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा को दिखाया.''भारत दुर्दशा'' नामक नाटक में उनकी प्रतिभा का श्रेष्ठ रूप सामने आता हे. जिसमें भारत के तत्कालीन जीवन की दुर्दशा का चित्र अंकित किया है. प्रतीक पात्रों द्वारा भारत के उत्थान–पतन एवं भविष्य की रूपरखा का यह ग्रंथ सजीव चित्र है. भारतेन्दु एक सफल गद्य लेखक व श्रेष्ठ कवि थे. इसी कारण उनके नाटकों में गद्य व पद्य का सुन्दर समन्वय मिलता है. ''कश्मीर कुसुम'' और ''बादशाह दर्पण''नाम के दो गद्य ग्रंथ जो कि विशेष रूप से इतिहास से सम्बन्धित थे, भी लिखे इससे ज्ञात हाता है कि उन्हें इतिहास का अच्छा ज्ञान था. भारतेन्दु जानते थे कि कोई भी राष्ट्र अपनी भाषा के बिना विकास नहीं कर सकता. वह निज भाषा का महत्त्व अच्छे तरीके से जानते थे और मानते थे कि भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी ही हो सकती है. इस बात पर उनके वैचारिक मतभेद समकालीन शिवप्रसाद 'सितारेहिन्द' से भी रहे जो भारतेन्दु की संस्कृत मिश्रित हिन्दी की तुलना में उर्दू मिश्रित हिन्दी के समर्थक थे. भारतेन्दु ने अपने पक्ष के समर्थन में एक जगह कहा भी है

'निजभाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटत ना हिय को शूल'

भारतेन्दु ने हिन्दी साहित्य में युगान्तकारी परिवर्तन किये हैं. जहाँ उनके नाटक हिन्दी भाषी जनता को अभिनय कला की ओर आकर्षित करते हैं वहीं दूसरी और उनका काव्य समस्त भारत के विशाल हृदय को स्वदेश प्रेम की भावना से भर देता है.इनके काव्य का ही परिणाम है कि नवीन जागरण की लहर एक छोर से दूसरे छोर तक फैल गई. इनकी वाणी का प्रसाद ही था जिसने हमें ''भारत दुर्दशा'' के बाद ''भारत भारती'' के गायक रूप में मैथिलीशरण जैसा कवि दिया.

यदि मैथिलीशरण गुप्त ''भारत भारती'' में यह लिखने का दुस्साहस कर सके कि

'है ब्रिटिश शासन की कृपा ही यह कि हम कुछ जग गये

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 2, February- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

स्वाधीन है हम धर्म में, सब भय हमारे भग गये
निज रूप को फिर हम सभी कुछ कुछ लगे हैं जानने
निज देश भारत वर्ष को फिर हम लगे हैं मानने'

तो इसके पीछे तत्कालीन परिवेश ही रहा है. भारत भारती' काव्य में यह लिखना संभव ही नहीं हो पाता यदि भारतेन्दु 'भारत दुर्दशा' में राजभक्ति के बहाने से देशभक्ति को बयान करने की परिपाटी नहीं बना जाते. देशभक्ति और राजभक्ति का यह सहयोजन आज कितना भी अर्न्तविरोधग्रस्त लगता हो लेकिन वास्तव में 'भारत भारती' तक यह भारतीय राष्टबोध का अभिन्न अंग बन चुका था. 'भारतेन्दु और उनके युग का मूल स्वर वस्तुत राष्ट्रभक्ति का ही स्वर है. उस राष्ट्रभक्ति का जैसी वह उस युग में हो सकती थी.'[ग]

भारतेन्दु ने अपने नाटकों के माध्यम से राष्ट्रीय समस्याओं, वैयक्तिक व सामाजिक से लेकर पौराणिक, ऐतिहासिक मौलिक नाटकों की रचना की.''अंधेर नगरी'' में अव्यवस्थित राज्य पर गहरी चोट है. भारतेन्दु ने ''भारत दुर्दशा'' और ''नील देवी'' नामक नाटक के गीतों में तथा अन्य स्वतंत्र कविताओं में भारत की हीन दशा का वर्णन किया है. उनका 1975 में लिखा नाटक ''भारत दुर्दशा'' तो प्रारम्भ ही इन पंक्तियों के साथ होता है.

''रोअहु सब मिलिकै आवहु भारत भाई
हा हा ! भारत दुर्दशा न देखी जाई''

इस प्रकार हम देखते हैं कि इनकी कविताओं में कहीं देश के अतीत गौरव की गर्वगाथा है तो कहीं वर्तमान अधोगति की क्षोभभरी वदना भी है. ऐसा जान पड़ता है कि भारतेन्दु और उनके समकालीन लेखक हिन्दी व हिन्दू जाति के उद्धार के लिए आन्दोलन करने वाले देश प्रेमी पत्रकार और प्रचारक अधिक थे और कवि और साहित्यकार कम.और यह भी सत्य है कि भारतेन्दु काव्य साहित्यिक महत्ता के लिए इतना विख्यात नहीं, जितना कि जनता के राजनीतिक तथा सामाजिक जीवन में गतिशीलता लाने के लिए.

भारतेन्दु हरिशचन्द्र में युग परिवर्तन, युग प्रवर्तन, युग नियमन और युग नेतृत्व की पूर्ण क्षमता थी उनकी आधुनिकता विदेशी प्रभावों को आत्मसात करती हुई भारतीय युग के रंग में पूर्णतः सरोबार भी.उनके युग का साहित्य तत्कालीन भारतीय जनता के लिए जितना स्फूर्ति और प्रेरणा दायक, आह्लादक, चरित्र निर्माणक तथा राष्ट्रीयता की भावनाओं का संचारक और उद्घोषक था वह आज के भारत के लिए भी उतना ही उपयोगी है.

भारतेन्दु साहित्यकाश में छाये रहे उनकी प्रेरणा से पत्र–पत्रिकायें प्रकाशित हुई. अनेक लोग लिखने लगे. साहित्यिक अभिरूचि के व्यक्तियों के वह प्रेरणास्त्रोत थे और उनकी इच्छा के विरूद्ध न किसी ने न कुछ कहा, न लिखा. जो व्यक्ति साहित्यिक दृष्टि से उनके विरोधी थे वह जनता के भी विरोधी थे. इनकी परणा से अनेक साहित्यिक संस्थाएँ अस्तित्व में आई और राष्ट्रीय सांस्कृतिक वातावरण को हिन्दी जगत में उत्पन्न किया. भारतेन्दु की व्यापक राष्ट्रीयता में सभी धर्मों व भाषाओं को सम्मानपूर्वक स्थान प्राप्त हुआ है. भारतेन्दु काल की देशप्रेम भावना परवर्ती युगों में क्रमशः विकसित होती हुई आज विश्व प्रेम के रूप में परिवर्तित हो चुकी है.

वास्तव में 1857 के स्वतंत्रता संग्राम की घटना घटित होने के बाद ज्यादा महत्वपूर्ण हो गयी. इसी को वीर सावरकर ने बाद में भारत की ''आजादी का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम'' कहा. इसी असफल क्रान्ति से बाद में सफल आजादी की राह प्रशस्त हुई. इस आन्दोलन को आधार बनाकर हिन्दी साहित्य में तत्कालीन भारतेन्दु से लेकर आधुनिक युग में सुभद्रा कुमारी चौहान तक ने ओजस्वी, उर्जस्वी कविताओं की रचना की. इस आन्दोलन ने अपने अधूरेपन से भारत की आजादी को पूर्णता प्रदान कर दी थी. ठीक ऐसे ही जैसे कि भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने अपने भाषाई आन्दोलन से एक जमीन तैयार की दी थी जिस पर महावीर प्रसाद द्विवेदी ने सरस्वती का बीज लगा दिया और हिन्दी का कारवाँ भारत के स्वतंत्रता संघर्ष के काल में दिनोंदिन आगे बढ़ता गया.

निष्कर्ष

स्वाधीनता संग्राम के प्रारम्भिक दिनों में राजनैतिक आन्दोलनो में या तो फारसी, उर्दू या अंग्रेजी का प्रयोग किया जाता था. यह भाषायें शासन और प्रशासन की भाषायें थी. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के प्रयासों के कारण खड़ी बाली को हिन्दी के रूप में स्वीकार किया गया और कालान्तर में देवनागरी लिपि और प्रशासन में भी स्थान मिला.

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 2, February- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

सन्दर्भ

[i]प्रेमचन्द, साहित्य का उद्देश्य, पृष्ठ संख्या–146
[ii]रोहिणी अग्रवाल, भारतीय नवजागरण : स्त्री प्रश्न और हिन्दी साहित्य, बहुवचन 23,पृष्ठ संख्या 195
[iii]डॉ.सुमनलता, 1857 और उसका साहित्यिक–सांस्कृतिक परिदृश्य, पंचशील शोध समीक्षा–अंक 9, पृष्ठ संख्या 58
[iv]शिवकुमार शर्मा, हिन्दी साहित्य : युग और प्रवृत्तियाँ, पृष्ठ संख्या 448
[v]आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ संख्या 305
[vi]डॉ नरेन्द्र इष्टवाल, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र : रचनात्मक संघर्ष की राष्ट्रभक्ति, पंचशील शोध समीक्षा, पृष्ठ संख्या 84
[vii]भारतेन्दु समग्र, प्रकाशन 1987, पृष्ठ संख्या.472
[viii]भारतेन्दु समग्र, प्रकाशन 1987, पृष्ठ संख्या 1092
[ix]डॉ. नगेन्द्र,हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ संख्या 467
[x]भारतेन्दु और भारतीय नवजागरण, शिवकुमार मिश्र, पृष्ठ संख्या 17